अनुवाद

अर्जुन ने जिज्ञासा की, हे प्रभो ! इन तीनों गुणों से अतीत पुरुष किन लक्षणों से जाना जाता है ? उसका आचरण किस प्रकार का होता है ? तथा किस साधन के द्वारा, वह इन गुणों से मुक्ति-लाभ करता है।।२१।।

तात्पर्य

इस श्लोक में अर्जुन की जिज्ञासा बहुत समीचीन है। वह मायिक गुणों से मुक्त पुरुष के लक्षण जानना चाहता है। यह किस प्रकार जाना जा सकता है कि कोई त्रिगुणमयी माया के प्रभाव से छूट चुका है ? उसकी प्रथम जिज्ञासा यही है। दूसरा प्रश्न मायामुक्त पुरुष के आचरण और कार्यकलाप के सम्बन्ध में है। वह स्वेच्छाचारी होता है या नियताचारी ? अर्जुन उस साधन को भी जानना चाहता है, जिसके द्वारा गुणों का उल्लंघन करके शुद्ध सत्त्व में स्थित हुआ जा सकता है। यह अतिशय महत्त्वपूर्ण है। जब तक उस साधन का ज्ञान न हो, जिसके द्वारा शाश्वत् गुणातीत अवस्था की प्राप्ति हो सकती है, तब तक उस सम्बन्धी लक्षणों की अभिव्यक्ति कैसी हो सकती है ? इस प्रकार अर्जुन के सभी प्रश्न सारगर्भित हैं। अगले श्लोकों में श्रीभगवान् ने इन सब का उत्तर दिया है।

श्रीभगवानुवाच।
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति।।२२।।
उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेंगते।।२३।।
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः।।२४।।
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते।।२५।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **प्रकाशम्**=(सत्त्वगुण के कार्य) प्रकाश; **च**=तथा; **प्रवृत्तिम् च**=और रजोगुण के कार्यरूप प्रवृत्ति; **मोहम्**=तमोगुण के कार्य मोह में; **एव च**=भी; **पाण्डव**=हे अर्जुन; **न द्वेष्टि**=द्वेष नहीं करता; **सम्प्रवृत्तानि**=प्राप्त होने पर; **न निवृत्तानि**=न निवृत्त होने पर; **कांक्षति**=अभिलाषा करता है; **उदासीनवत्**=उदासीन की भाँति; **आसीनः**=स्थित हुआ; **गुणैः**=गुणों के द्वारा; **यः**=जो; **न विचाल्यते**=विचलित नहीं होता; **गुणाः**=गुण; **वर्तन्ते**= कार्य कर रहे हैं; **इति एव**=इस प्रकार जान कर; **यः**=जो; **अवतिष्ठति**=स्थिर रहता है; **न इंगते**=विचलित नहीं होता; **समदुःखसुखः**=दुःख-सुख में समान; **स्वस्थः**= स्वरूप-निष्ठ; **समलोष्टाश्मकाञ्चनः**=मिट्टी, पत्थर और स्वर्ण में समान बुद्धि